PEASANT MOVEMENTS(PART-2)

FOR:P.G.SEM-3,CC-13,UNIT-3

BY:ARUN KUMAR RAI

ASST.PROFESSOR

P.G.DEPT.OF HISTORY

MAHARAJA COLLEGE

ARA.

दक्कन के दंगे(1875 ई.)

- दक्कन के विद्रोह का मूल कारण बाहरी मारवाड़ी तथा गुजराती महाजनों एवं सूदखोरों के अत्याचार व शोषण से मुक्त होने की प्रबल आकांक्षा थी। इन साहूकारों में अधिकांश बाहरी मारवाड़ी तथा गुजराती थे जो ऊंची ब्याज दर पर कर्ज देते थे और ऋण न चुका पाने पर न्यायालय से अपने पक्ष में निर्णय कराकर उनकी भूमि पर अधिकार कर लेते थे।
- अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान कपास निर्यात में वृद्धि के कारण किसानों को जो फायदा हुआ वह 1864 ई.में गृहयुद्ध समाप्त होने तथा

दक्कन के दंगे

उपमहादवीप से यूरोप में कपास की आपूर्ति प्रारंभ होने से स्थितियां बदल गई ।साथ ही सरकार ने भू राजस्व भी लगभग 50% बढ़ा दिया था। बड़ी संख्या में किसानों को ऋण लेना पड़ा। पुलिस, साहूकारों के अत्याचार एवं शोषण को सहना पड़ा।

- दिसंबर 1874 ई.में सिरूर तालुका से प्रारंभ हुआ साहूकार-विरोधी दक्कन के दंगों का प्रभाव सितंबर 1875 तक छः तालुको में 33 स्थानों तक पहुंच गया।

दक्कन के दंगे

- इस विद्रोह के दमन के लिए पुलिस तथा सेना बुलानी पड़ी। 1,000 से अधिक लोग बंदी बना लिये गये।सरकार ने **दक्कन विद्रोह आयोग** नियुक्त किया तथा कृषकों की अवस्था को सुधारने के लिए **1879 ई. कृषक राहत अधिनियम** पारित किया जिसमें दीवानी विधि संहिता की कुछ धाराओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया और कृषकों को ऋण न लौटाने पर गिरफ्तार अथवा जेल में बंद नहीं किया जा सका था।

मोपला विद्रोह

- मद्रास प्रेसिडेंसी के मालाबार में मोपला विद्रोह हुआ।केरल का मालाबार क्षेत्र मुस्लिम बहुसंख्यक इलाका था ।ये मुसलमान **मोपला** के नाम से जाने जाते थे। ये अधिकांशतः कृषक ,मजदूर या छोटे व्यापारी थे। अशिक्षित होने के कारण काजियों या मौलवियों का प्रभाव ज्यादा था जिन्हें **थंगल** कहा जाता था ।
- मालाबार क्षेत्र में जमींदार और साहूकार हिंदू नंबूदरी और नायर थे। इन हिंदू जमींदारों को **जेन्मी** कहा जाता था। ये जमींदार और साहूकार किसानों का

मोपला विद्रोह

शोषण करते और मनमाने ढंग से लगान वसूल करते थे इन वह स्वामियों को पुलिस एवं न्यायालयों का भी संरक्षण प्राप्त था।

- इस तरह मोपला किसान विदेशी शासन ,जमींदारों और साहूकारों से त्रस्त थे। अतः बाध्य होकर मोपलों ने बार-बार विद्रोह किया। **1836- 54** के दौरान 22 मोपला विद्रोह हुए। इसके अतिरिक्त **1873,1880,1884,1896** एँव **1921** में विद्रोह हुये।

मोपला विद्रोह

- 19वीं सदी में हुए यह मोपला विद्रोह जो प्रथम मोपला विद्रोह के नाम से ज्ञात है मुख्यतः हिंदू भूस्वामियों और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध था। 1921 के द्वितीय मोपला विद्रोह का मूल कारण कृषि जन्य असंतोष था।
- यह विद्रोह भूस्वामी ,जमींदार के विरुद्ध किसानों का विद्रोह था जो आर्थिक कारणों से परिचालित था किंतु इस विद्रोह को साम्प्रदायिक रूप दे दिया गया क्योंकि मोपला कृषक मुसलमान थे जबकि भूस्वामी जमींदार हिंदू।

पागलपंथी विद्रोह

- यह एक अर्ध धार्मिक पंथ था।इसके सदस्य मुख्य रूप से **बंगाल** के **मैमनसिंह जिले** के (अब बांगलादेश में)रहने वाले हरोंग और गारू आदिम जनजातियों के थे। इस वंश का संस्थापक **करमशाह** नामक एक भिक्षु था जिसके पुत्र **टीपू** ने धार्मिक और गैर राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित होकर किसानों के विद्रोह को संगठित किया।
- टीपू ने किसानों से गैरकानूनी उपकर वसूलने वाले जमींदारों के अत्याचारों के विरुद्ध उनका खुलकर समर्थन किया।

पागलपंथी विद्रोह

- उसने अपने चारों ओर अनुयायियों का एक दल एकत्रित कर दिया और लूटपाट करके धनराशि एकत्र की। उन्हें निर्धारित राशि से अधिक लगान भुगतान करने से मना किया।
- पागलपंथी की बढ़ती गतिविधियों से सचेत होकर सरकार ने टीपू की मांगों पर विचार किया किसानों की सुरक्षा एंव कड़े उपायों की व्यवस्था की। यह विद्रोह लगभग **10 वर्षों** तक(1825-35) जारी रहा और अंततः व्यापक सैन्य कार्रवाई के बाद समाप्त हो सका।

पाबना विद्रोह(1873-76)

- 1859 के रेंट अधिनियम के तहत किसानों को जमीन पर कुछ स्वामित्व दिया गया ,लगान वृद्धि पर अंकुश लगाया गया। इसके बावजूद जमींदार मनमाने ढंग से लगान बढ़ा देते थे। अतः **1873 ई**.में **पाबना** (बंगाल) किसानों ने अपना संघ कायम किया और जमीन दारी शोषण के विरुद्ध विद्रोह किया। इस आंदोलन से **ईशान चंद्र राय**, **शंभूपाल** आदि जुड़े थे ।किसानों ने ब्रिटिश शासन का विरोध नहीं किया।उनका नारा था- **हम रानी की रैयत बने रहना चाहते है।**

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा कृषक

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कम से कम अपने आरंभिक काल में अंग्रेजी साम्राज्य वादियों तथा भारतीय वूर्जूवा तक सीमित थी। अतःउनसे यह आशा नहीं थी कि वे उत्पीड़ित किसानों का पक्ष लेंगे। कांग्रेस ने कभी भी भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों में किसानों के हितों की रक्षा के लिए कानून नहीं माँगे।

20 वीं सदी का कृषक आंदोलन

- भारतीय राजनीति में गांधी जी के आगमन से देश को एक नई आर्थिक एवं राजनीतिक दिशा मिली । चूकी वे अपने आंदोलनों के आधार को बढ़ाना चाहते थे इसीलिए उन्होंने ग्रामीण जनता तथा कृषकों को अपने आंदोलन में सम्मिलित करने का प्रयत्न किया। ईसके फलस्वरूप किसान आंदोलन राष्ट्रीय संघर्ष के साथ बड़े व्यवस्थित रूप से जुड़ गया तथा स्थानीय संघर्षों का पुंज मात्र नहीं रह गया।

चंपारण सत्याग्रह(1917ई.)

- गांधी जी के नेतृत्व में पहला आंदोलन उत्तरी बिहार में नेपाल से सटे हुए चंपारण के किसानों की दयनीय दशा के विरोध में उभरा ।ये किसान 19वीं शताब्दी में यूरोपियन नील बागान मालिकों द्वारा अपने कृषि क्षेत्र के **3/20 वें** भाग पर नील की खेती करने के लिए बाध्य थे। यह व्यवस्था **तिनकठिया** के नाम से जानी जाती थी। यह एक शोषक एंव निर्मम व्यवस्था थी।

चंपारण सत्याग्रह

- नील की खेती में आम काश्तकारों की अपेक्षा बागान मालिकों को अधिक लाभ होता था और भूमि पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ता था ।युद्ध काल में जर्मनी में रसायनिक रंगों के विकास के बाद नील का बाजार काफी मंदा हो गया और चंपारण के बागान मालिक और किसान भी नील की खेती बंद करना चाहते थे ।इन परिस्थितियों का लाभ गोरे बागान मालिक उठाना चाहते थे और अधिक से अधिक लगान एवं अन्य करों में वृद्धि कर काश्तकारों को इस अनुबंध से मुक्त करना चाहते थे।

चंपारण सत्याग्रह

- 1917 में चंपारण के पीड़ित किसान **राजकुमार शुक्ल** के आग्रह पर महात्मा गांधी ने चंपारण आना स्वीकार किया। गांधीजी ने **राजेंद्र प्रसाद** की सहायता से कृषकों की वास्तविक स्थिति की जांच की । उन्होंने अंग्रेजों के जिला छोड़ देने के आदेश को भी नहीं माना। गांधीजी के कड़े रुख को देखते हुए तत्कालीन **उपराज्यपाल गेट** ने किसानों के कष्टों की जांच के लिए एक समिति गठित की। गांधीजी भी इसके सदस्य हुए। तीन कठिया व्यवस्था समाप्त कर दी गई

चंपारण सत्याग्रह

लगान भी घटा दिया गया और किसानों को क्षतिपूर्ति राशि भी मिली ।इस प्रकार गांधी जी का यह पहला प्रयास सफल रहा। किसानों में नई चेतना जागी और वे राष्ट्रीय आंदोलन को भी अपना समर्थन देने लगे।

खेड़ा सत्याग्रह(1918)

- गुजरात के खेड़ा जिले में किसान लगान वृद्धि एवं अन्य शोषण से पीड़ित थे ।सूखे के कारण उनकी फसल नष्ट हो गई थी फिर भी किसानों को कर से छूट नहीं मिल रही थी। कुनबी- पाटीदार किसानों के कष्टों के निवारण करने के लिए गांधीजी **इंदूलाल याज्ञिक** एंव **वल्लभ भाई पटेल** जैसे नेताओं के साथ खेड़ा गए और किसानों को लगान अदा न करने की अपनी मांग पर डटे रहने का परामर्श दिया।

खेड़ा सत्याग्रह

- इस प्रबल संघर्ष के दबाव में आकर ब्रिटिश सरकार ने इस आशय का गोपनीय आदेश निकाला कि लगान केवल उन्हीं किसानों से वसूल किया जाए जो इसे अदा करने में समर्थ हो। इस प्रकार अपने उद्देश्य में सफल होने के बाद 1918 में गांधी जी ने आंदोलन वापस ले लिया।

संयुक्त प्रांत में आंदोलन (1920-22)

- आगरा एंव अवध क्षेत्र में ताल्लुकेदारों,जमींदारों एवं उपनिवेशवादी व्यवस्था ने किसानों का जीना दूभर कर दिया ।**बाबा रामचंद्र** ने जमींदारों के विरुद्ध किसानों को संगठित किया। गांव के किसानों को संगठित एवं जागृत करने के लिए उन्होंने **रामचरितमानस** का उपयोग किया तथा **नेहरू** से इस क्षेत्र में आने का अनुरोध किया ।सरकार ने बाबा रामचंद्र को गिरफ्तार किया परंतु किसानों के दबाव के कारण उन्हें छोड़ना पड़ा ।अंततः **1920** में **अवध किसान सभा** का गठन हुआ।

संयुक्त प्रांत में आंदोलन

- 1920 में किसान आंदोलन कांग्रेस के असहयोग आंदोलन से जुड़ गया 1921 में किसान आंदोलन तीव्र हो उठा और उत्तर प्रदेश के रायबरेली ,फैजाबाद और सुल्तानपुर में तेजी से फैल गया। किसानों ने बेदखली रोकने की मांग की। सरकार की दमनकारी नीतियों ,कांग्रेसियों के आंदोलन को रोकने का प्रयास और अवध लगान अधिनियम पारित होने से आंदोलन कमजोर हो गया। इससे किसान शांत नहीं हुए।

संयुक्त प्रांत में एका आंदोलन

- 1921-22 में हरदोई ,सीतापुर ,बाराबंकी आदि जिलों में किसानों का **एका आंदोलन** आरंभ हुआ। इसे शुरू करने में किसान नेता **मदारी पासी** तथा **अहीर** जैसे निम्न जातियों के नेताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही।आंदोलन को कांग्रेस की खिलाफत के नेताओं का सहयोग मिला। फिर भी सरकारी नीति और दमन से यह आंदोलन असफल रहा

बारदोली सत्याग्रह (1928)

- कपास के मूल्य में गिरावट आने के बावजूद 1926-27 ई.में सरकार ने गुजरात में सूरत जिला के बारदोली तालुका में **भू राजस्व 22%** बढ़ा दिया ।फलतः किसानों पर करों का बोझ बढ़ गया। किसानों की ओर से कांग्रेस कार्यकर्ता **वल्लभभाई पटेल** ने सत्याग्रह की शुरुआत की। महिलाओं की भी आंदोलन में सक्रिय भूमिका रही।**मैक्सवेल ब्रूमफील्ड** की जांच के बाद सरकार ने लगान घटाकर **6.03%** कर दिया।

To be continued.....